# एम.एच.डी–01 : हिंदी काव्य–1
# (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)
# सत्रीय कार्य

**पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी–01**
**सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी–01/टी.एम.ए./2020–21**
**कुल अंक : 100**

1. निम्नलिखित प्रत्येक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10x4= 40

(क) मोको कहाँ ढूँढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल, ना मैं मसजिद, न काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया–कर्म में, नाहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहों, पल भर की तालास में।
कहै कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसो की स्वाँस में।

(ख) का सिंगार ओहि बरनौं राजा। ओहिक सिंगार ओहि पै छाजा।
प्रथम सीस कस्तूरी केसा। बलि बासुकि को औरु नरेसा।।
भँवर केस वह मालति रानी। बिसहर लुरहिं लेहिं अरघानी।।
बेनी छोरी झारु जौं बारा। सरग पतार होइ अंधियारा।।
कोंवर कुटिल केस नग कारे। लहरन्हि भरे भुअंग बिसारे।।
बेधे जानु मलयगिरि बासा। सीस चढ़े लोटहिं चहुं पासा।
घुंघुरवारि अलकैं विख भरीं। सिंकरी पेम चहहिं गियं परीं।।

(ग) खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर कों चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सो 'कहाँ जाई का करी?'
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूं बिलोकिअत,
सांकरे सबै पै, राम! रावरें कृपा करी।
दारिद–दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु!
दुरित–दहन देखि तुलसी हहा करी ।

(घ) फागु के भीरे अभीरन तें, गहि गोबिंद लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्माकर, ऊपर नाई अबीर की झोरी।
छीन पीतंबर कंमर तें, सु बिदा दई मीड़ि कपोलनरोरी।
नैन नचाई कह्यो मुसक्याइ, लला फिरि खेलन आइयो होरी।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : 15x3= 45

(क) 'पद्मावत' में वर्णित प्रेमकथा तथा लोकतत्व के स्वरूप का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

(ख) सूरदास के वात्सल्य और श्रृंगार वर्णन की प्रमुख विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।

(ग) घनानंद की स्वच्छंद चेतना के प्रमुख आयामों पर प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए : 5x3=15

(क) गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति की पदावली की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

(ख) सिद्धों एवं नाथों ने कबीर के काव्य को किस प्रकार प्रभावित किया है?

(ग) पद्माकर के शृंगार वर्णन की संक्षिप्त चर्चा कीजिए।